गुरु नानक देव का ऐसा ही कोई पद लिखिए।

....

....

....

....

3.1 मूल पाठ

प्रेरक प्रसंग

गुरु नानकदेव

जनेऊ

जब गुरु नानक 9 वर्ष के थे, तब उनके पिता ने उनके यज्ञोपवीत संस्कार का आयोजन किया। कुल पुरोहित नानक को जनेऊ पहनाने लगे। नानक ने पूछा– "पंडित जी, इस धागे से क्या लाभ है?"

"इससे तन-मन और आत्मा पवित्र रहती है।" पुरोहित ने कहा।

नानक बोले– "पंडित जी, दया की कपास, संतोष का धागा, संयम की गाँठ बनाइए और उसे सत्य से बाँधिए। वही आत्मा का सच्चा जनेऊ होगा। यदि आपके पास ऐसा जनेऊ है तो मुझे दीजिए। वह न टूटेगा, न जलेगा, न अपवित्र होगा और न ही गुम होगा। आप इन चार धागों को जनेऊ कहते हैं, जो मृत्यु के साथ टूट जाते हैं और आत्मा अकेली चली जाती है।"

"जनेऊ हिन्दू धर्म की पवित्र निशानी है, इसे पहनना परम आवश्यक है।" - कुल पुरोहित ने समझाया।

"पंडित जी, हिन्दू धर्म की पवित्र निशानी तो निःस्वार्थ समाज सेवा है। जिसमें दया, क्षमा, विद्या, धैर्य, त्याग, प्रेम और संतोष नहीं, वह कैसा धर्म है?" नानक ने कहा।

पंडितजी ज्ञानी बालक की अलौकिक प्रतिभा से चमत्कृत होकर घर लौट गए।

वास्तविक ब्रह्मभोज

एक बार एमनाबाद में बढ़ई लालो ने गुरु नानक से अपने यहाँ ठहरने की प्रार्थना की। उस समय एमनाबाद

का दीवान भागो था। वह बहुत धनी था। भागो ने अपने पिता के श्राद्ध पर ब्रह्मभोज का आयोजन किया। दूर-दूर से संत-महात्माओं को बुलाया। एक व्यक्ति ने दीवान से शिकायत कर कहा– "दीवान जी, नानक नामक एक संत लालो बढ़ई के यहाँ शिष्यों सहित ठहरा है। वह उसी के यहाँ खाता-पीता है। वह ब्रह्मभोज में नहीं आया।"

मालिक भागो ने अपना सेवक भेजकर गुरुजी को शिष्यों सहित बुलावा भेजा। किन्तु नानक ने न्यौता ठुकरा दिया। पुरोहित जी बोले– "जब तक नानक भोज नहीं करेगा, तब तक आपका ब्रह्मभोज अधूरा रहेगा।"

दीवान ने तुरंत कुछ लोगों को भेजकर उनको बुलवाया। उनके आने पर दीवान ने पूछा– "आप पहले बुलाने पर ब्रह्मभोज में क्यों नहीं आए।"

गुरुजी ने कहा– "चलो, अब तो आ गया हूँ। अपना भोज दो।"

दीवान ने घी की पूड़ी और पकवान दिया। नानक ने लालो बढ़ई को रोटी लाने को कहा। लालो की रोटी बाजरे की थी। नानक ने दाहिने हाथ में लालो की बाजरे की रोटी, बाएँ हाथ में पूड़ी पकड़ उन्हें निचोड़ना शुरू किया। बढ़ई की रोटी से दूध निकलने लगा। दीवान की रोटी से ख़ून की धार बह चली। तब गुरु नानक ने कहा– "ए मालिक! देख, मैंने तेरा भोजन क्यों नहीं खाया। यह ब्रह्मभोज नहीं, लोगों का ख़ून है। ब्रह्मभोज तो लालो के घर पर ही हो सकता है।" दीवान शर्म से ज़मीन में गड़ गया। भागो गुरु नानक के सामने नतमस्तक था।

विश्वेश्वरैया

नियम के प्रति आस्थावन

एक बार डॉ० विश्वेश्वरैया भारतरत्न की उपाधि लेने दिल्ली आए। उन्हें राष्ट्रपति भवन में विशेष अतिथि के रूप में ठहराया गया। तीन दिन हो गए। चौथे दिन वह राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी के पास गए। बोले– "अब मुझे आज्ञा दीजिए, जाना चाहता हूँ।"

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने पूछा– "ऐसी जल्दी क्या है? आप कुछ दिन और ठहरिए। मैं आपसे कुछ आवश्यक विचार-विमर्श करना चाहता हूँ।" इस पर विश्वेश्वरैया ने कहा– "यदि ऐसी बात है तो कुछ दिन और रुक जाऊँगा, पर ठहरूँगा अन्यत्र कहीं।"

राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने कहा– "क्या आपको यहाँ किसी प्रकार का कष्ट है?"

"नहीं श्रीमान, ऐसी बात नहीं है। पर राष्ट्रपति भवन में ठहरे मुझे तीन दिन हो गए। नियमानुसार तीन दिन से अधिक यहाँ कोई व्यक्ति ठहर नहीं सकता। मैं नियम का अपवाद नहीं बन सकता। इसलिए कहीं और ठहरना ही पसंद करूँगा। वहीं से आपके संपर्क में बना रहूँगा।"

प्रसिद्ध शिल्पकर्मी व इंजीनियर डॉ० विश्वेश्वरैया कर्त्तव्य-पालन व नियम के प्रति अत्यंत आस्थावान थे।

महान इंजीनियर

तब देश में अंग्रेज़ों का शासन था। एक दिन बम्बई मेल यात्रियों से खचाखच भरी दौड़ी चली जा रही थी। उसमें अधिकतर लोग अंग्रेज़ ही थे, पर एक डिब्बे में धोती-कुर्ता पहने साँवले रंग का एक भारतीय यात्री चुपचाप बैठा था। सभी अंग्रेज़ यात्री उसे बेवकूफ़ समझकर उस पर व्यंग्य कर रहे थे।

कुछ देर बाद अचानक उस व्यक्ति ने उठकर जंज़ीर खींच दी। गाड़ी धीरे-धीरे रुक गई। उस व्यक्ति को अन्य यात्री बुरा-भला कहने लगे। इतने में गार्ड वहाँ आ गया। पूछने लगा- "जंज़ीर किसने खींची है?" इस पर वह व्यक्ति बोला- "जंज़ीर मैंने खींची है। मुझे ऐसा अनुमान हुआ कि यहाँ से करीब एक फर्लांग दूर रेल की पटरी उखड़ी हुई है।"

गार्ड हैरानी से उस व्यक्ति को देखते हुए बोला- "आपको कैसे पता चला?"

वह व्यक्ति बोला- "दरअसल गाड़ी की स्वाभाविक गति में अंतर आ गया था। इस कारण प्रतिध्वनित होने वाली आवाज़ से मुझे ख़तरे का आभास हो गया।"

गार्ड उस व्यक्ति के साथ अन्य यात्रियों को लेकर एक फर्लांग आगे पहुँचा। सब लोग यह देखकर दंग रह गए कि वास्तव में एक जगह रेल की पटरी के जोड़ खुले हैं। सभी लोगों ने उसकी सराहना की। गार्ड ने उससे पूछा- "आप कौन हैं?" वह व्यक्ति सहज भाव से बोला- "मैं एक इंजीनियर हूँ। मेरा नाम डॉ० एम० विश्वेश्वरैया है।" नाम सुनते ही सब सन्न रह गए। उनका नाम देश के महान इंजीनियरों में लिया जाता है।

शब्दार्थ

यज्ञोपवीत	=	जनेऊ
संयम	=	अपने ऊपर काबू रखना, धैर्य
अलौकिक	=	संसार से परे, लोक से परे
प्रतिभा	=	बुद्धिमानी, योग्यता
चमत्कृत	=	आश्चर्यचकित
ब्रह्मभोज	=	ब्राह्मणों को खिलाया जाने वाला भोजन
शर्म से ज़मीन में गड़ना	=	अत्यधिक शर्मिंदा होना
नतमस्तक होना	=	झुकना, बात मान लेना
उपाधि	=	पदवी
अतिथि	=	मेहमान
विचार-विमर्श	=	सलाह-मशविरा
अन्यत्र	=	किसी और जगह

अपवाद	=	अलग, नियम से हटकर
संपर्क	=	साथ में, संबंध
शिल्पकर्मी	=	हाथों से वस्तु बनाने वाला, कारीगर
आस्थावान	=	विश्वास रखने वाला
प्रतिध्वनि	=	लौटी हुई आवाज़, गूँज
सन्न रह जाना	=	किसी बात या घटना से अत्यधिक चकित हो जाना

3.2 बोध-प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. शब्दों का कौन-सा मेल गलत है–

(क) धागा-संतोष ☐ (ख) कपास-दया ☐

(ग) गाँठ-संयम ☐ (घ) वस्त्र-सत्य ☐

2. अंग्रेज़ यात्री डॉ० विश्वेश्वरैया पर व्यंग्य क्यों कर रहे थे?

(क) उनके द्वारा जंज़ीर खींचने के कारण ☐

(ख) उनके इंजीनियर होने के कारण ☐

(ग) उनके अनुमान लगाए जाने के कारण ☐

(घ) उनके रंग एवं उनकी पोशाक के कारण ☐

3.3 आइए समझें

3.3.1 अंश–1

आइए, गुरु नानक संबंधी प्रसंगों को एक बार फिर पढ़ें।

जब गुरु नानक देव .... नतमस्तक था।

आइए, अब देखें कि लेखक गुरु नानकदेव के जीवन-प्रसंगों का वर्णन करके क्या प्रेरणा देना चाहता है। वास्तव में गुरु नानकदेव बचपन से ही रूढ़ियों का विरोध करते थे। उन्हें कर्मकांडों एवं पाखंडों पर कोई विश्वास नहीं था। वे चाहते थे कि जीवन में सरलता और सादगी होनी चाहिए। इसीलिए उन्होंने यज्ञोपवीत संस्कार का विरोध किया था। जो बात उन्हें तर्कसंगत और विश्वसनीय नहीं लगती थीं, उसे वे कदापि मानने को तैयार नहीं होते थे। उन्हें लगता था कि इस धागे को शरीर पर धारण करने का कोई लाभ नहीं है। यह केवल चली आ रही परंपरा को निभाना मात्र है। इसीलिए उन्होंने इस संस्कार का विरोध किया। यह घटना उनके साहस, निर्भीकता, सच्चे आचरण में दृढ़ विश्वास की प्रतीक है।

दूसरी घटना इस बात का संकेत करती है कि गुरु नानकदेव की विचारधारा अत्यंत क्रांतिकारी थी। वे परिश्रमी, ईमानदार व सच्चे व्यक्तियों का हृदय से सम्मान करते थे। किसी व्यक्ति की धन-संपदा व सत्ता का उन पर कोई असर नहीं होता था। इसलिए उन्होंने दीवान भागो का निमंत्रण ठुकरा दिया। उन्हें मालूम था कि सत्ता पर बैठे लोग गलत तरीके से पैसा कमाते हैं। गुरु नानकदेव के जीवन की घटना हमें प्रेरणा देती है कि हमें मेहनती, सीधे और ईमानदार व्यक्ति का सम्मान करना चाहिए। इसलिए गुरु नानकदेव ने बढ़ई के यहाँ भोजन करना स्वीकार किया, दीवान साहब के यहाँ नहीं। ये दोनों प्रसंग हमें सिखाते हैं कि महान व्यक्ति सदैव महान मूल्यों की रक्षा के लिए जीवन बिताते हैं। गुरु नानकदेव ने इन्हीं महान मूल्यों की स्थापना द्वारा सिक्ख धर्म को एक नया, सरल व सुगम रास्ता दिखाया।

पाठगत प्रश्न-3.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. गुरु नानकदेव को यज्ञोपवीत संस्कार क्या लगा?

   (क) तर्कसंगत और विश्वसनीय ☐ (ख) साहस एवं निर्भीकता का प्रतीक ☐

   (ग) पाखंड एवं कर्मकांड ☐ (घ) सरलता एवं सादगी से युक्त ☐

2. नानक को बढ़ई की रोटी दीवान की पूड़ी की तुलना में श्रेष्ठ लगी; क्योंकि वह–

   (क) ब्रह्मभोज के अवसर की थी ☐ (ख) धनी के घर की थी ☐

   (ग) बढ़ई के घर की थी ☐ (घ) मेहनत की कमाई थी ☐

3.3.2 अंश–2

अब डॉ० विश्वेश्वरैया से संबंधित प्रसंगों को एक बार फिर पढ़ें।

एक बार डॉ० विश्वेश्वरैया .... में लिया जाता है।

डॉ० विश्वेश्वरैया का चरित्र इतना उच्च कोटि का था कि वे किसी अनुचित लाभ या कृपा की कल्पना ही नहीं कर सकते थे। पहली घटना इस बात की ओर संकेत करती है कि 'भारतरत्न' का सम्मान पाने वाला व्यक्ति भी राष्ट्रपति के आग्रह को इसलिए स्वीकार नहीं करता कि राष्ट्रपति भवन में किसी अतिथि का तीन दिन से अधिक रुकने का नियम नहीं है। इसलिए वे राष्ट्रपति भवन से बाहर किसी अन्य स्थान पर ठहरने की इच्छा व्यक्त करते हैं। उनके द्वारा नियमों का सम्मान व पालन हमें बताता है कि प्रत्येक नागरिक को नियमों का सम्मान करना चाहिए।

डॉ० विश्वेश्वरैया के जीवन से जुड़े दूसरे प्रसंग से हमें अंग्रेज़ों द्वारा भारतीयों के प्रति किए गए व्यवहार की सूचना तो मिलती ही है, डॉ० विश्वेश्वरैया के सूक्ष्म ज्ञान व उनकी जानकारी के बारे में भी पता चलता है। आज स्थितियाँ बदल गई हैं– रंग-भेद और संस्कृति-भेद अपराध माना जाता है, पर एक समय ऐसा

भी था, जब शासितों के रंग और उनकी पोशाक का मज़ाक उड़ाया जाता था। डॉ० विश्वेश्वरैया ने अंग्रेज़ों को अपने ज्ञान एवं विवेक के आधार पर अपने से कम साबित किया। रेलगाड़ी की गति और प्रतिध्वनि के सूक्ष्म संकेतों से उन्हें मालूम हो गया था कि पटरी में कहीं कोई ख़राबी आ गई है। उनका अनुमान बिल्कुल सही निकला। सभी उनकी बुद्धि का लोहा मान गए। इस तरह हम देखते हैं कि अलग-अलग क्षेत्रों के इन दोनों ही महापुरुषों ने समाज के हित में काम किया। अपनी सादगी, ईमानदारी और बुद्धिमानी से समाज को नई दिशा प्रदान की।

पाठगत प्रश्न-3.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. पहली घटना से पता चलता है कि डॉ० विश्वेश्वरैया–

(क) जल्दी नाराज़ होते थे	☐	(ख) सम्पन्न थे	☐
(ग) सिद्धांतवादी थे	☐	(घ) अपवाद थे	☐

2. 'सन्न रह जाने' का आशय है–

(क) सहमना	☐	(ख) डरना	☐
(ग) चकित होना	☐	(घ) चिढ़ना	☐

3.4 भाषा-प्रयोग

इस पाठ की भाषा सहज, सरल व आम बोलचाल की है। पाठ में तत्सम व तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है। कुछ आगत शब्द भी आए हैं; जैसे- रेल, इंजीनियर, बेवकूफ़, गार्ड, मालिक, फ़र्लांग आदि।

पाठ में– 'ज़मीन में गड़ जाना', 'सन्न रह जाना' जैसे मुहावरों का भी प्रयोग किया गया है।

संज्ञा

इस पाठ में गुरु नानक, लालो, भागो, विश्वेश्वरैया, राजेन्द्र प्रसाद, एमनाबाद जैसे शब्द आए हैं। ये किसी व्यक्ति या जगह के नाम हैं। इसके साथ-साथ धागा, शिष्य, रेल, अंग्रेज़, इंजीनियर आदि शब्द भी पाठ में आए हैं। ये किसी वर्ग या समूह विशेष के नाम हैं।

पाठ में दया, क्षमा, संतोष, संयम आदि शब्द भी आए हैं। ये शब्द किसी विचार या भाव का बोध कराते हैं।

ये सभी शब्द संज्ञा शब्द हैं।

> जो शब्द किसी प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को सूचित करते हैं, वे संज्ञा शब्द कहलाते हैं।

अब इन वाक्यों को पढ़िए-

- मुश्ताक़ ने वैभव से पूछा– "मुरादाबाद कब जा रहे हो?"

- पेड़ पर पत्तियाँ, फूल, फल और पक्षी कितने सुंदर लग रहे हैं!
- संतोष, संयम और ममता मानवता के विकास में सहायक होते हैं।

पहले वाक्य में 'मुश्ताक़', 'वैभव' किसी व्यक्ति के नाम हैं। 'मुरादाबाद' किसी स्थान के नाम का बोध कराता है।

दूसरे वाक्य में 'पेड़', 'पत्तियाँ', 'फूल', 'फल' और 'पक्षी' शब्द किसी वस्तु या प्राणी की जाति का बोध कराते हैं।

तीसरे वाक्य में 'संतोष', 'संयम', 'ममता' और 'मानवता' शब्द किसी भाव का बोध कराते हैं।

उपर्युक्त सभी संज्ञा शब्द हैं।

संज्ञा के प्रकार

संज्ञा शब्द तीन प्रकार के होते हैं– व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा तथा भाववाचक संज्ञा। आइए इनके बारे में विस्तार से जानें।

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा–** किसी व्यक्ति (प्राणी), वस्तु और स्थान के विशेष नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– गुरु नानक, लालो, भागो, विश्वेश्वरैया, राजेन्द्र प्रसाद, फ़ारूख, गंगा-जुमना, देहली, अजमेर, असम आदि शब्द।
2. **जातिवाचक संज्ञा–** किसी जाति, वर्ग या समूह विशेष के नाम को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– धागा, शिष्य, रेल, धोती-कुर्ता, अंग्रेज़, इंजीनियर आदि शब्द।
3. **भाववाचक संज्ञा–** किसी विचार, गुण-दोष, दशा या भाव का बोध कराने वाले शब्द भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं! जैसे– दया, क्षमा, धैर्य, त्याग, प्रतिभा, कमीनापन, बचपन, सच्चाई आदि शब्द।

   भाववाचक संज्ञाएँ प्राय: तीन प्रकार के शब्दों से बनाई जाती हैं- जातिवाचक संज्ञा से; जैसे- बुढ़ापा, लड़कपन, मित्रता, पंडिताई आदि। विशेषण से; जैसे- गरमी, सरदी, कठोरता, मिठास आदि। क्रिया से; जैसे- घबराहट, सजावट, चढ़ाई, बहाव आदि।

3.5 आपने क्या सीखा

- गुरु नानक ने दया, संतोष, संयम और सत्य जैसे मानवीय मूल्यों पर बल दिया।
- दया, क्षमा, त्याग, प्रेम, संतोष आदि को अपनाकर नि:स्वार्थ समाज-सेवा करना ही सच्चा धर्म है।
- ईमानदारी और मेहनत से कमाया गया अन्न ही श्रेष्ठ एवं स्वाद से भरपूर है।
- सिद्धांतों का पालन व्यक्तित्व को और बड़ा बनाता है।

- ज्ञान एवं सूझ-बूझ ही वास्तविक योग्यता है।
- जो शब्द किसी प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को सूचित करते हैं, वे संज्ञा शब्द कहलाते हैं।
- संज्ञा के भेद हैं - व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा और भाववाचक संज्ञा।

3.6 योग्यता-विस्तार

- **लेखक-परिचय** - इन प्रेरक प्रसंगों को श्री कौस्तुभ पंत ने लिखा है। श्री पंत का जन्म ग्राम- पुनलता, ज़िला- अल्मोड़ा (उत्तराखंड) में 10 मई, 1935 को हुआ था। श्री कौस्तुभ पंत बहुत लंबे समय तक दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग से जुड़े रहे। उन्होंने नवसाक्षरों के लिए विभिन्न विधाओं में रचनाएँ लिखी हैं। एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्य-पुस्तकों के लेखन से वे सक्रिय रूप से जुड़े रहे।
- सिखों के दस गुरुओं के नाम पता करके लिखिए।
- भारत के पाँच प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के योगदान के विषय में जानकारी एकत्रित कीजिए।

3.7 पाठांत प्रश्न

1. **सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

   (i) पुरोहित के अनुसार जनेऊ पहननी चाहिए; क्योंकि

   (क) यह पूर्वजों की निशानी है (ख) इसे पहनना शुभ होता है

   (ग) इससे आत्मा पवित्र होती है (घ) इससे शरीर स्वस्थ रहता है

   (ii) डॉ० विश्वेश्वरैया ने राष्ट्रपति भवन में अधिक दिन रुकने से क्यों मना कर दिया?

   (क) उन्हें जल्दी वापस लौटना था

   (ख) उन्हें राष्ट्रपति भवन अच्छा नहीं लग रहा था

   (ग) वे अपने परिचित के पास रुकना चाहते थे

   (घ) वहाँ तीन दिन से अधिक रुकना नियम के विरुद्ध था

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

   (i) गुरु नानक ने पुरोहित से क्या पूछा?

   ....

   (ii) गुरु नानक के विचार से हिंदू धर्म की पवित्र निशानी कौन-सी है?

   ....

(iii) बढ़ई की रोटी और दीवान की रोटी में किस प्रकार का अंतर था?

....

(iv) डॉ० विश्वेश्वरैया ने राष्ट्रपति भवन छोड़ने के लिए आग्रह क्यों किया?

....

(v) डॉ० विश्वेश्वरैया ने रेल की जंज़ीर किस कारण खींची?

....

(vi) डॉ० विश्वेश्वरैया को खतरे का आभास कैसे हुआ?

....

3. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

शब्द	**वाक्य-प्रयोग**
यज्ञोपवीत	....
प्रतिभा	....
अतिथि	....
संपर्क	....

4. संज्ञा किसे कहते हैं? इसके कितने प्रकार होते हैं?

....

....

5. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों के प्रकार लिखिए :

शब्द	**प्रकार**
धैर्य	....
गंगा	....
धागा	....

गुरु नानक ....

अहमदाबाद ....

कमीनापन ....

रेल ....

6. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

एक अत्यंत सुंदर और बलिष्ठ युवक था। सभी उसकी शारीरिक बनावट और सुंदरता की प्रशंसा करते थे। उसमें एक कमी थी– वह बिल्कुल अनपढ़ था। एक बार उसे आवश्यक कार्य से कचहरी जाना पड़ा। वह अपने कागज़ों को पढ़वाने के लिए मुंशी के पास गया। वहाँ भीड़ लगी थी। मुंशी ने उसे झिड़क दिया। कुछ देर वह शांत खड़ा रहा। वह मुंशी के पास फिर गया। मुंशी ने कहा- "देखने में तो हट्टे–कट्टे हो, खूबसूरत हो, पढ़ना नहीं जानते! बिना पढ़ाई के तुम्हारी सुंदरता का कोई महत्त्व नहीं है। जाओ, लाइन में लगो। जब फुरसत मिलेगी, तुम्हारे कागज़ पढ़ूँगा।" मुंशी की बात सुनकर सब हँसने लगे। वह युवक अपमान से बहुत लज्जित हुआ। ढाई घंटे बाद मुंशी ने उस युवक के कागज़ों को पढ़ा। उस युवक ने बिना समय गँवाए उसी दिन से पढ़ाई–लिखाई प्रारंभ की। खूब मन लगाकर पढ़ने लगा। उसे हर क्षेत्र में असाधारण सफलता मिली। वह युवक और कोई नहीं, सर गणेशदत्त सिंह थे। वे बाद में ब्रिटिश शासन के अधीन बिहार–उड़ीसा प्रांत के मंत्री बने और शिक्षाविद के रूप में विख्यात हुए।

(i) युवक देखने में कैसा था?

....

(ii) वह युवक मुंशी के पास किसलिए गया था?

....

(iii) सुंदरता को महत्त्वपूर्ण बनाने के लिए क्या आवश्यक है?

....

(iv) अपमान का युवक पर क्या प्रभाव पड़ा?

....

(v) उस युवक का नाम क्या था? वह आगे चलकर किस कारण से विख्यात हुआ?

....

3.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

1. (घ) वस्त्र-सत्य

2. (घ) उनके रंग एवं उनकी पोशाक के कारण

पाठगत प्रश्न-3.1

1. (ग) पाखंड एवं कर्मकांड

2. (घ) मेहनत की कमाई थी

पाठगत प्रश्न-3.2

1. (ग) सिद्धांतवादी थे

2. (ग) चकित होना

❀ ❀ ❀

4

मैं और मेरा देश

हम सब अपने को बड़े गर्व से भारतीय कहते हैं, क्यों? क्योंकि हम इस देश के नागरिक हैं, यह हमारी जन्मभूमि है। यह देश हम सबसे मिलकर बना है – 'हम सब' का अर्थ बहुत व्यापक है। इसका अर्थ है – सभी धर्मों, मतों, संप्रदायों और विचारधाराओं के लोग। किसी देश की पहचान इन सभी लोगों के साथ-साथ देश की प्रकृति से भी होती है। यानी देश का उसके नागरिकों से तथा पर्यावरण से बड़ा गहरा संबंध होता है। आइए, इस पाठ में देखते हैं कि कैसे अपने आचरण के आधार पर एक-एक नागरिक देश से जुड़ा हुआ है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- अच्छे नागरिक के गुण बता सकेंगे;
- दूसरे देश से आने वाले अतिथि के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए, यह समझा सकेंगे;
- दूसरे देश में जाने पर हमें कैसा आचरण करना चाहिए, यह स्पष्ट कर सकेंगे;
- वाक्यों में सर्वनाम शब्दों की पहचान कर सकेंगे;
- सर्वनाम के भेद बता सकेंगे।

करके सीखिए

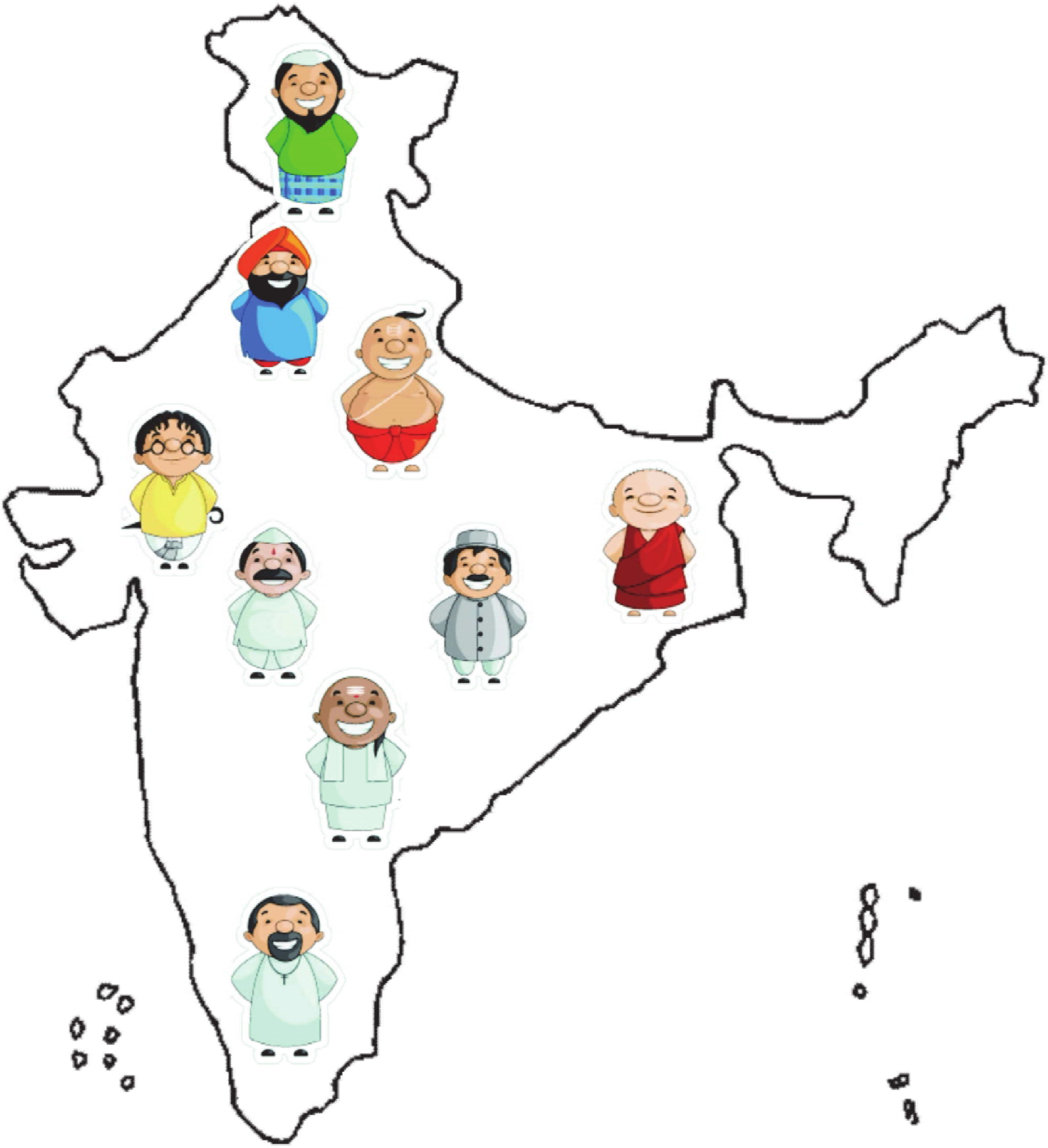

1. यह मानचित्र किसका है? ....

2. भारत क्या है? ....

3. देश किनसे बनता है? ....

4.1 मूल पाठ

आइए इस पाठ को ध्यान से पढ़ते हैं -

मैं और मेरा देश

हमारे देश के महान संत स्वामी रामतीर्थ एक बार जापान गए। वे एक दिन रेल में यात्रा कर रहे थे। उन दिनों फल ही उनका भोजन था। उस दिन उन्हें खाने को फल नहीं मिले। गाड़ी एक स्टेशन पर ठहरी। वहाँ भी उन्होंने फलों की खोज की, किंतु पा न सके। उनके मुँह से निकला– "जापान में शायद अच्छे फल नहीं मिलते।"

एक जापानी युवक प्लेटफ़ार्म पर खड़ा था। उसने ये शब्द सुन लिए। सुनते ही वह भाग कर कहीं दूर से एक टोकरी ताज़े फल ले आया। उसने वे फल स्वामी रामतीर्थ को भेंट किए और कहा– "लीजिए, आपको फलों की ज़रूरत थी।"

स्वामीजी ने समझा यह कोई फल बेचने वाला है। उन्होंने उससे फलों के दाम पूछे। उसने दाम लेने से इनकार कर दिया। आग्रह करने पर उसने कहा– "आप इनका मूल्य देना ही चाहते हैं, तो अपने देश में जाकर यह न कहिएगा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।"

स्वामीजी युवक का उत्तर सुनकर मुग्ध हो गए। युवक ने अपने कार्य से अपने देश का गौरव न जाने कितना बढ़ा दिया।

इस गौरव की ऊँचाई का अनुमान दूसरी घटना सुनकर लगाया जा सकता है। किसी देश का एक युवक जापान में शिक्षा लेने आया। एक दिन वह सरकारी पुस्तकालय से पुस्तक पढ़ने के लिए लाया। पुस्तक में कुछ दुर्लभ चित्र थे। इन चित्रों

को युवक ने पुस्तक में से निकाल लिया और पुस्तक वापस कर दी। किसी जापानी विद्‌यार्थी ने उसे देख लिया और पुस्तकालय को सूचना दे दी। पुलिस ने उसकी तलाशी ली। वे चित्र उस विद्‌यार्थी के कमरे से बरामद हुए। उस विद्यार्थी को जापान से निकाल दिया गया।

अपराधी को दंड मिलना ही चाहिए। पर मामला यहीं नहीं रुका। उस पुस्तकालय के बाहर बोर्ड पर लिख दिया गया– "पुस्तकालय में .... देश के विद्‌यार्थियों का प्रवेश वर्जित है।"

जहाँ जापानी युवक ने अपने काम से अपने देश का सिर ऊँचा किया, वहीं दूसरे युवक ने अपने काम से अपने देश के मस्तक पर कलंक का टीका लगा दिया।

हमारी हीनता और श्रेष्ठता का संबंध देश की हीनता और श्रेष्ठता से जुड़ा हुआ है। जब हम कोई हीन या बुरा काम करते हैं, तो हमारे माथे पर ही कलंक का टीका नहीं लगता, देश का भी सिर नीचा होता है। उसकी प्रतिष्ठा गिरती है। जब हम कोई श्रेष्ठ कार्य करते हैं, तो उससे हमारा ही सिर नहीं ऊँचा होता, देश का भी सिर ऊँचा होता है। उसका गौरव बढ़ता है। इसलिए हमें कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे देश की प्रतिष्ठा पर आँच आए।

अक्सर लोग अपने देश की आलोचना करते हैं। अपने देश की तुलना अन्य देशों से करते हैं– दूसरे देशों की श्रेष्ठता और अपने देश की हीनता का बखान करते हैं। याद रखिए, किसी देश को उन्नत या हीन उस देश के निवासी ही बनाते हैं।

क्या आप कभी केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकते हैं? अपने घर का कूड़ा बाहर सड़क पर फेंकते हैं? अपशब्दों का प्रयोग करते हैं? इधर की उधर लगाते हैं? अपने घर, अपनी गली को गंदा रखते हैं? ज़ीनों में, कोनों में पीक थूकते हैं? निमंत्रित होने पर विलंब से पहुँचते हैं, या वचन देकर भी घर आने पर समय पर नहीं मिलते?

यदि आपका उत्तर 'हाँ' है, तो आपके द्‌वारा देश के सम्मान को भयंकर आघात लग रहा है और राष्ट्रीय संस्कृति को गहरी चोट पहुँच रही है।

यदि आपका उत्तर नहीं है, तो आप अपने देश का सम्मान बढ़ा रहे हैं। आपके हाथों में देश की संस्कृति सुरक्षित रहेगी।

– कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

शब्दार्थ

प्लेटफ़ार्म	=	रेलगाड़ी के रुकने तथा उसमें उतरने-चढ़ने का स्थान
आग्रह	=	अनुरोध, विनती
मूल्य	=	कीमत
गौरव	=	गर्व, स्वाभिमान

मुग्ध	=	मोहित, रीझना
अनुमान	=	अंदाज़ा
दुर्लभ	=	कठिनाई से प्राप्त
बरामद	=	प्राप्त करना
वर्जित	=	मनाही
हीनता	=	छोटापन
श्रेष्ठता	=	सबसे अच्छा होना
कलंक	=	वह बुरा काम जिससे बदनामी होती है
आघात	=	चोट
अपशब्द	=	अपमान करने वाले शब्द, गाली-गलौज़
विलंब	=	देर से
राष्ट्रीय	=	देश का
संस्कृति	=	हमारे आचार-विचार, खान-पान, रहन-सहन इत्यादि

मुहावरों के अर्थ

सिर ऊँचा करना	=	सम्मान बढ़ाना
कलंक का टीका लगना	=	बदनामी होना
प्रतिष्ठा पर आँच आना	=	सम्मान घटना
इधर की उधर लगाना	=	एक से दूसरे की शिकायत करना

4.2 बोध-प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. स्वामी रामतीर्थ को जापान में फलों की तलाश इसलिए थी, क्योंकि उन दिनों–

   (क) उनकी तबियत खराब थी ☐ (ख) जापान में फल ही मिलते थे ☐

   (ग) फल ही उनका भोजन था ☐ (घ) जापानी फल भेंट करते थे ☐

2. जापान में एक युवक को दंडित करने का कारण था –

   (क) देश को कलंकित करना ☐ (ख) चोरी करना ☐

   (ग) विदेशी होना ☐ (घ) पुस्तकालय जाना ☐

3. जापानी युवक का स्वामी रामतीर्थ से फलों की कीमत न लेने का कारण था

(क) फलों का सस्ता होना ☐ (ख) दानशीलता ☐

(ग) देशप्रेम ☐ (घ) अतिथि प्रेम ☐

4.3 आइए समझें

4.3.1 अंश–1

हमारे देश .... बढ़ा दिया।

इस अंश में एक जापानी युवक द्वारा अपने देश से प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। भारतीय संत प्राय: व्रत-उपवास करते रहते हैं। जिस दिन की यह घटना है, उस दिन स्वामीजी का भी उपवास था। व्रत में वे केवल फल ही खाते थे। वे रेल से यात्रा कर रहे थे। उन्होंने इधर-उधर स्टेशन पर निगाह दौड़ाई, पर कहीं भी उन्हें अच्छे फल दिखाई नहीं दिए। उनके मुँह से अचानक निकल गया कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते। यह बात एक जापानी युवक ने सुन ली। उसके दिल को ठेस लगी कि किसी ने अच्छे फल न मिलने पर उसके देश की बुराई की। यह बात उससे सहन नहीं हुई।

वह तुरंत प्लेटफ़ार्म से बाहर गया। वहाँ से अच्छे और ताज़े फल लाकर स्वामीजी को दिए। स्वामीजी ने समझा कि यह युवक कोई फल बेचने वाला है। अत: उन्होंने उससे फलों की कीमत पूछी। परंतु उस युवक ने दाम लेने से मना कर दिया। बार-बार आग्रह करने पर उसने कहा कि अगर आप कीमत देना चाहते हैं तो अपने देश में जाकर यह न कहें कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।

स्वामीजी अत्यंत प्रभावित हुए। उन्हें लगा कि जिस देश में ऐसे युवक हैं, जो अपने देश की बुराई नहीं सह सकते, वह देश महान है। वास्तव में ऐसी सकारात्मक सोच वाले लोग ही देश के सम्मान की रक्षा करते हैं। यही देशभक्ति है, यही सच्चा देशप्रेम है।

पाठगत प्रश्न-4.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. स्वामी रामतीर्थ कहाँ गए थे?

(क) अमेरिका ☐ (ख) जापान ☐

(ग) इंग्लैण्ड ☐ (घ) चीन ☐

2. स्वामी रामतीर्थ प्लेटफ़ार्म पर क्या खोज रहे थे?

(क) टिकट ☐ (ख) कुर्सी ☐

(ग) फल ☐ (घ) चाय ☐

4.3.2 अंश–2

इस गौरव की .... प्रवेश वर्जित है।

जिस प्रकार जापानी युवक ने अपने देश के नाम को बदनाम होने से बचाने के लिए ताज़ा फलों की टोकरी लाकर दी, वह कोई मामूली काम नहीं था। वह काम कितना बड़ा और महत्त्वपूर्ण था, इसका अनुमान दूसरी घटना से लगता है। एक बार किसी दूसरे देश के युवक ने जापान के एक पुस्तकालय से पुस्तक पढ़ने के लिए ली। उस पुस्तक में ऐसे चित्र थे, जो बहुमूल्य और नायाब थे। उस युवक ने उन चित्रों को उस किताब से चुराकर अपने पास रख लिया। इस चोरी की खबर एक जापानी युवक ने पुलिस को दे दी। पुलिस ने उसके कमरे से वे चित्र तलाश लिए। उसे जापान से निकाल दिया गया। इतना ही नहीं पुस्तकालय के बाहर यह लिखकर लगा दिया गया कि उस युवक के देश का कोई व्यक्ति इस पुस्तकालय में प्रवेश नहीं कर सकता।

एक व्यक्ति ने अपने आचरण से पूरे देश के मुख पर कालिख पोत दी। इन दो घटनाओं की तुलना करें तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हमें नागरिक के तौर पर ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए, जिससे देश के नाम को बट्टा लगे। इस घटना के उल्लेख से फल लाने वाले जापानी युवक का अपने देश से लगाव का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। देश के प्रत्येक निवासी को यह ध्यान रखना चाहिए कि उसके द्वारा किए गए अच्छे-बुरे काम का असर पूरे देश पर पड़ता है।

पाठगत प्रश्न–4.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. युवक को दुर्लभ चित्रों की चोरी करते किसने देखा?

(क) जापानी विद्यार्थी ने ☐ (ख) पुस्तकालयाध्यक्ष ने ☐

(ग) पुलिस ने ☐ (घ) लेखक ने ☐

2. युवक को जापान से क्यों निकाल दिया गया?

(क) पुस्तक से चित्र चुराने के लिए ☐ (ख) पुस्तक फाड़ने के लिए ☐

(ग) पुस्तक चुराने के लिए ☐ (घ) पुस्तक न लौटाने के लिए ☐

4.4 भाषा-प्रयोग

पाठ में बोल-चाल के शब्दों के साथ छोटे और सरल वाक्यों की रचना की गई है। मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है; जैसे- सिर नीचा होना, सिर ऊँचा होना, इधर की उधर लगाना आदि। आइए, इस पाठ की मदद से 'सर्वनाम' के बारे में जानें।

पाठ में आए इन वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

स्वामी रामतीर्थ जापान गए थे।

वे रेल में यात्रा कर रहे थे।

पहले वाक्य में स्वामी रामतीर्थ शब्द संज्ञा है। संज्ञा के बारे में आप पहले पढ़ चुके हैं। अब दूसरा वाक्य पढ़िए। इस वाक्य में वे शब्द का प्रयोग स्वामी रामतीर्थ के स्थान पर किया गया है। वे शब्द 'सर्वनाम' है।

इसी तरह के दो और वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

एक युवक प्लेटफार्म पर खड़ा था।

वह एक टोकरी ताज़ा फल ले आया।

पहले वाक्य में युवक शब्द 'संज्ञा' है। दूसरे वाक्य में 'वह' शब्द का प्रयोग युवक के स्थान पर किया गया है। अतः 'वह' 'सर्वनाम' है।

वे शब्द जो संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे- मैं, हम, तू, तुम, यह, ये, वह, वे, आप, जो, उसने, उन्होंने आदि।

सर्वनाम के 6 भेद होते हैं। आइए, इन्हें समझें-

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम –** ऐसे सर्वनाम शब्द जो वक्ता, श्रोता या अन्य व्यक्ति के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं, पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे– मैं, तुम, वह, वे।

   पुरुषवाचक सर्वनाम के भेद:

   (क) **उत्तम पुरुष –** ऐसे सर्वनाम शब्द, जिनका प्रयोग वक्ता या लेखक अपने लिए करते हैं, उन्हें उत्तम पुरुष सर्वनाम कहते हैं; जैसे– मैं, हम आदि।

   (ख) **मध्यम पुरुष –** ऐसे सर्वनाम शब्द, जिनका प्रयोग सुनने वाले के लिए किया जाता है, मध्यम पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे– तू, तुम, आप आदि।

   (ग) **अन्य पुरुष –** ऐसे सर्वनाम शब्द, जिनका प्रयोग अनुपस्थित व्यक्ति के लिए किया जाता है, उन्हें अन्य पुरुष सर्वनाम कहते हैं; जैसे– वह, वे आदि।

2. **निश्चयवाचक सर्वनाम –** ऐसे सर्वनाम शब्द, जिनका प्रयोग किसी निश्चित वस्तु या प्राणी के लिए किया जाता है, निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–

   उसे बुलाकर लाओ।

वह लाओ, यह नहीं।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित 'उसे', 'वह' और 'यह' शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** – ऐसे सर्वनाम शब्द, जिनसे वस्तुओं और प्राणियों का निश्चय नहीं हो पाता, अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–

कोई जा रहा है

कुछ गिर गया है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित 'कोई' और 'कुछ' शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

4. **संबंधवाचक सर्वनाम** – ऐसे सर्वनाम शब्द, जिनका प्रयोग वाक्य में एक–दूसरे के साथ संबंध बताने के लिए किया जाता है, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–

जो करेगा, सो भरेगा

जिसने दर्द दिया, वही दवा देगा।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित 'जो', 'सो', 'जिसने', 'वही' शब्द संबंधवाचक सर्वनाम हैं।

5. **प्रश्नवाचक सर्वनाम** – ऐसे सर्वनाम शब्द, जिनका प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–

कहानी कौन सुनाएगा?

नेहा किसके साथ गई है?

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित 'कौन', और 'किसके' शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

6. **निजवाचक सर्वनाम** – निज शब्द का अर्थ है 'अपना'। जिन सर्वनामों का प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहे जाते हैं; जैसे–

स्वयं चला जाऊँगा।

अपने–आप चला जाएगा।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित 'स्वयं', और 'अपने-आप' शब्द निजवाचक सर्वनाम हैं।

4.5 आपने क्या सीखा

- किसी भी देश के विषय में जान–बूझे बिना नकारात्मक टिप्पणी नहीं करनी चाहिए।
- श्रेष्ठ नागरिक अपने देश की छवि की रक्षा करता है।
- किसी भी गलत कार्य से देश की छवि का नुकसान हो सकता है।
- वे शब्द जो संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं।

- सर्वनाम के छह भेद हैं - पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, संबंधवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम।

4.6 योग्यता-विस्तार

इस पाठ के लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' हैं। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के जनपद सहारनपुर के ग्राम देवबंद में 29 मई, 1909 ई. को हुआ था। वे एक अच्छे लेखक के साथ-साथ योग्य पत्रकार भी थे। सन् 1935 ई. में वे गांधी जी के संपर्क में आए। इसके बाद वे अपनी सारी संपत्ति दान कर, देश सेवा में लग गए। वे कई बार जेल भी गए। उन्होंने कहानी, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र आदि साहित्य की विविध विधाओं में रचना की। उनकी सर्वाधिक चर्चित पुस्तकें हैं- 'नई पीढ़ी, नए विचार', 'ज़िन्दगी मुस्काई', 'माटी हो गई सोना', 'आकाश के तारे धरती के फूल', 'दीप जले शंख बजे' और 'बाजे पायलिया के घुँघरू' आदि।

4.7 पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) स्वामी रामतीर्थ को किसने अच्छे फल लाकर दिए?

....

....

(ii) युवक ने स्वामी जी को फल देकर किसका मान बढ़ाया?

....

....

(iii) दूसरे युवक ने कुछ दुर्लभ चित्र कहाँ से चुराए?

....

....

(iv) नागरिकों के बुरे आचरण का देश पर क्या प्रभाव पड़ता है?

....

....

(v) अपने देश का मान बढ़ाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

....

....

2. निम्नलिखित कथनों में से सही के आगे (✓) का और गलत के आगे (✗) का निशान लगाइए :

(i) युवक ने स्वामीजी को दण्डवत प्रणाम किया। ☐

(ii) युवक ने स्वामीजी के लिए रेल में अपनी सीट खाली कर दी। ☐

(iii) युवक स्वामीजी के लिए ताज़े फल ले आया। ☐

(iv) दूसरे देश के युवक ने पुस्तक से दुर्लभ चित्र चुराए। ☐

(v) युवक ने पुस्तक पुस्तकालय में लौटा दी। ☐

(vi) युवक पुस्तक चुरा कर लाया था। ☐

3. सर्वनाम शब्द किन्हें कहते हैं? उदाहरण देकर लिखिए।

....

....

4. निम्नलिखित वाक्यों में आए सर्वनाम शब्दों को छाँटकर उसके प्रकार/भेद लिखिए :

	वाक्य	सर्वनाम शब्द	प्रकार
(i)	वे एक दिन रेल से यात्रा कर रहे थे।	....	....
(ii)	स्वामी जी ने समझा, यह कोई फल बेचने वाला है।	....	....
(iii)	युवक ताज़े फल कहाँ से लाया?	....	....
(iv)	आज शायद कोई खाने के लिए आए।	....	....
(v)	यह कमीज़ तो मेरी है।	....	....
(iv)	जो जाएगा, सो पुरस्कार पाएगा।	....	....

5. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

हमारे देश में, दूसरे देशों के लोग घूमने आते हैं। हम लोग भी अनेक स्थानों पर घूमने जाते हैं। हम देखते हैं कि स्थानीय लोग, रिक्शे वाले, ताँगे वाले, स्कूटर वाले, टैक्सी वाले बाहर से आने वालों से, खासकर विदेशी सैलानियों से ज़्यादा पैसे ऐंठ लेते हैं। हम अपनी संस्कृति– 'अतिथि देवो भव' को

भूलते जा रहे हैं। जब आप दूसरों के साथ अभद्र व्यवहार करेंगे, तो लोग आपके गाँव, शहर, देश को बदनाम करेंगे ही। लोग कहने लगते हैं- उस गाँव के, उस शहर के, उस देश के लोगों का व्यवहार ठीक नहीं है। धोखाधड़ी बहुत है। इससे वहाँ के लोग बदनाम हो जाते हैं। हमें बाहर वालों का आदर-सत्कार करना चाहिए। उचित व्यवहार करना चाहिए। धोखाधड़ी व बेईमानी नहीं करनी चाहिए। अपनी स्वच्छता का परिचय देना चाहिए। रेल, बस व अन्य भीड़ वाली जगहों पर लोगों की सुविधा का ध्यान रखना चाहिए। वृद्ध, महिलाओं, बच्चों के प्रति आदर व स्नेह का भाव रखना चाहिए। इससे हमारे गाँव, शहर, देश का नाम रोशन होगा।

(i) दूसरी जगह से आने वालों के साथ हम क्या करते हैं?

....

(ii) हमारी संस्कृति क्या कहती है?

....

(iii) हमें बाहर से आए लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

....

(iv)) हम क्यों बदनाम होते हैं?

....

(v) अपने देश का नाम रोशन करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

....

4.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

1. (ग) फल ही उनका भोजन था
2. (ख) चोरी करना
3. (ग) देशप्रेम

पाठगत प्रश्न-4.1

1. (ख) जापान
2. (ग) फल

पाठगत प्रश्न-4.2

1. (क) जापानी विद्यार्थी ने
2. (क) पुस्तक से चित्र चुराने के लिए

5

तुलसी और रसखान के सवैये

आपने कबीर, रहीम, तुलसी आदि कवियों के दोहे अवश्य सुने होंगे और सुनकर, गाकर या पढ़कर उनका आनंद भी लिया होगा। तुलसीदास की चौपाइयाँ भी सुनी होंगी और सूरदास के पद भी। आइए, इस पाठ में तुलसी और रसखान के सवैयों का आनंद लेते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- श्रीराम के बाल रूप का वर्णन कर सकेंगे;
- वनवास प्रारंभ होने पर सीता को किन कष्टों से गुज़रना पड़ा, इसका उल्लेख कर सकेंगे;
- सीता के प्रति राम के अनुराग का मूल्यांकन कर सकेंगे;
- कृष्ण के बाल रूप की सहजता व बाल-लीला का बखान कर सकेंगे;
- ब्रज भूमि के महत्त्व को कृष्ण-भक्ति से जोड़कर देख सकेंगे;
- पर्यायवाची शब्दों को समझकर उनका यथोचित प्रयोग कर सकेंगे।

करके सीखिए

चित्र-1 : तुलसीदास

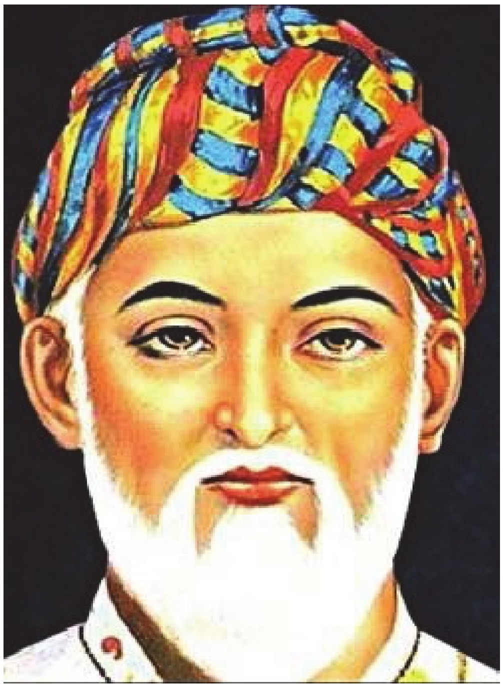

चित्र-2 : रसखान

1. तुलसीदास अपने किस ग्रंथ के लिए प्रसिद्ध हैं?

....

2. रसखान भगवान के किस रूप के भक्त थे?

....

3. दोनों किस तरह की कविता लिखते थे?

....

5.1 मूल पाठ

तुलसीदास के सवैये

1. कबहूँ ससि माँगत आरि करैं, कबहूँ प्रतिबिंब निहारि डरैं।
कबहूँ करताल बजाइ कै नाचत, मातु सबै मन मोद भरैं।।

कबहूँ रिसिआई कहैं हठि कै पुनि लेत सोई जेहि लागि अरैं।
अवधेस के बालक चारि सदा, तुलसी-मन-मन्दिर में बिहरैं।

2. पुर तें निकसीं रघुबीर बधू, धरि-धीर दए मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनीं जल की, पुट सूखि गए मधुराधर वै।।
फिरि बूझति हैं चलनो अब केतिक, पर्नकुटी करिहौं कित ह्वै।
तिय की लखि आतुरता पिय की अँखियाँ अतिचारु चलीं जल च्वै।।

रसखान के सवैये

1. धूरि भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत खात फिरैं अंगना, पग पैंजनी बाजति पीरी कछोटी।।
वा छबि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कला निधि कोटी
काग के भाग बड़े सजनी, हरि-हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी।।

2. या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर कौं तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि नवौं निधि को सुख नंद की गाय चराय बिसारौं।
नैनन ते रसखानि जबै ब्रज के बन–बाग तड़ाग निहारौं।
कोटिक हू कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं।।

शब्दार्थ

आरि	=	ज़िद, अड़ना	दए	=	दिए
प्रतिबिंब	=	परछाईं	डग	=	कदम
करताल	=	ताली	द्वै	=	दो
मोद	=	प्रसन्नता	कनीं	=	कण
रिसिआई	=	गुस्सा होकर	पुट	=	होंठ
पुनि	=	फिर	मधुराधर	=	सुंदर होंठ
लागि अरैं	=	जिसके लिए ज़िद करते हैं	बूझति हैं	=	पूछती हैं
अवधेस	=	अयोध्या के राजा (दशरथ)	केतिक	=	कितना
बिहरैं	=	विहार करें, निवास करें	कित ह्वै	=	कहाँ पर
पुर	=	नगर (यहाँ अयोध्या)	तिय	=	पत्नी
निकसी	=	निकलीं			

लखि	=	देखकर
चारु	=	सुंदर
जल च्वै	=	आँसू निकल पड़े
धूरि	=	धूल
पैंजनी	=	पायल
कछोटी	=	कच्छा (जांघिया)
बिलोकत	=	देखकर
वारत	=	न्योछावर
काम	=	कामदेव (देवता)
कोटी	=	करोड़ों
काग	=	कौआ
कामरिया	=	कंबल
तिहूँ पुर	=	तीनों लोक (आकाश, धरती, पाताल)
आठहुँ सिद्धि	=	आठ सिद्धियाँ (अणिमा, लघिमा, महिमा, गरिमा आदि)
नवौं निधि	=	नौ निधियाँ (पद्म, महा पद्म आदि)
तड़ाग	=	तालाब
निहारौं	=	देखूँ
कलधौत	=	चाँदी, सोना
करील	=	एक झाड़ी

5.2 बोध-प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. तुलसी के सवैये में बालक राम का कौन-सा रूप प्रबल है–

   (क) क्रोधी ☐ (ख) डरपोक ☐

   (ग) हठी ☐ (घ) नृत्य में मग्न ☐

2. वन-मार्ग पर चलते हुए सीता द्वारा राम से कुटिया बनाने के लिए पूछे जाने का कारण है–

   (क) थकान ☐ (ख) उल्लास ☐

   (ग) महत्त्वाकांक्षा ☐ (घ) जिज्ञासा ☐

3. रसखान द्वारा कृष्ण के बाल रूप-वर्णन में कौन-सी चीज़ वस्त्र और आभूषण में नहीं आती–

   (क) कछोटी ☐ (ख) चोटी ☐

   (ग) पैंजनी ☐ (घ) माला ☐

5.3 आइए समझें

5.3.1 अंश–1

1. कबहूँ ससि .... में बिहरैं।

तुलसीदास जी ने इस सवैये में 'राजकुमार राम' का नहीं अपितु साधारण बालक के रूप में राम का वर्णन किया है। साधारण बालक भी इसी तरह चाँद माँगने की ज़िद करते हैं। वे भी परछाईं देखकर डर जाते हैं। कभी खुशी से नाचने लगते हैं, तो कभी ज़िद पर अड़ जाते हैं और तभी मानते हैं, जब उनको अपनी चाही हुई वस्तु मिल जाती है। बच्चों की ये लीलाएँ माँ के मन को प्रसन्नता से भर देती हैं। राम की इस बाल-लीला पर मुग्ध तुलसी कामना करते हैं कि अवध नरेश दशरथ के चारों बालक सदा उनके (तुलसी के) हृदय रूपी घर में विहार करें।

तुलसी इस वर्णन में बालक के स्वाभाविक रूप का चित्र खींचने में पूरी तरह से सफल रहे हैं।

2. पुर तें .... चलीं जल च्वै।।

तुलसीदासजी ने कोमालांगी सीता को वन-मार्ग पर चलते देखकर उनकी अवस्था का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। वन-मार्ग पर दो कदम चलकर ही सीता के माथे पर पसीना आ जाना, अकुलाकर राम से पर्णकुटी बनाने की बात पूछना अत्यंत मर्मस्पर्शी है। एक राजवधू, जो अभी कुछ दिन पहले ही पिता मिथिला नरेश के महल से निकलकर अयोध्या के विशाल राज्य में आई और जिसने जीवन में कष्ट कभी देखे नहीं, कठोर जीवन की आँधी के पहले स्पर्श से ही काँप उठती है। सीता की इस व्याकुलता को देखकर राम की आँखें भी भर आती हैं।

पाठगत प्रश्न-5.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'कबहूँ ससि माँगत आरि करैं, ...' सवैये में राम की बाल-लीला देखकर प्रसन्न दिखाया गया है–

(क) पिता को	☐	(ख) माताओं को	☐
(ग) भाइयों को	☐	(घ) तुलसी को	☐

2. दो कदम चलते ही सीता का थक जाना क्या सिद्ध करता है–

(क) वन का मार्ग कठिन था	☐	(ख) शरीर कोमल था	☐
(ग) कष्ट सहने की आदत नहीं थी	☐	(घ) पर्णकुटी जल्दी बनाने की इच्छा थी	☐

5.3.2 अंश–2

1. धूरि भरे .... माखन–रोटी।

इस सवैये में कोई महिला अपनी सखी से श्री कृष्ण के बाल–सौंदर्य का वर्णन कर रही है। वह कहती है कि श्री कृष्ण धूल में सने हुए भी अत्यंत सुंदर लगते हैं। जैसा सुंदर उनका शरीर है, वैसी ही सुंदर उनके सिर पर चोटी बनी हुई है। वे बाबा नंद के आँगन में खाते–खेलते घूम रहे हैं। घूमते हुए उनके पाँव की पायल बज उठती है। श्रीकृष्ण ने पीले रंग की कछौटी पहनी हुई है। श्रीकृष्ण की इस छवि को देखकर वह कहती है कि मैं श्रीकृष्ण के इस रूप पर करोड़ों कामदेवों की सुंदरता को न्योछावर कर सकती हूँ। वह सखी से कहती है कि इस कौए के भाग्य का क्या कहना! यह तो श्री कृष्ण के हाथ से मक्खन–रोटी छीनकर ले गया।

कृष्ण के बाल–रूप का वर्णन करने में रसखान ने अत्यंत सहजता का परिचय दिया है। रसखान बताना चाहते हैं कि माएँ बच्चों को नहला–धुलाकर, सजा–सँवारकर खेलने के लिए भेज देती हैं। पंन्तु बच्चे थोड़ी ही देर में धूल–मिट्टी में सन जाते हैं। उनका रूप धूल–मिट्टी में भी गंदा नहीं लगता बल्कि और निखर उठता है। श्रीकृष्ण के ऐसे ही बाल–रूप का वर्णन यहाँ रसखान ने किया है।

2. या लकुटी .... ऊपर करौं।

रसखान दूसरे सवैये में अत्यंत भाव–विभोर होकर कहते हैं कि कृष्ण की इस लाठी और कंबल पर मैं तीनों लोकों (स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल) का राज्य भी त्याग दूँ। यदि मुझे नंद की गाय चराने का अवसर मिले, तो आठों सिद्धियों और नौ निधियों का सुख (हर प्रकार का सुख)भी भूल जाऊँ। वे इच्छा प्रकट करते हैं कि काश मैं अपनी इन आँखों से ब्रज के बाग–बगीचों और तालाबों को निहारूँ। उनकी इच्छा होती है कि करोड़ों चाँदी के महल इन करील के कुंजों पर न्योछावर कर दें।

यहाँ कवि ने अनेक उदाहरण देकर यह सिद्ध किया है कि कृष्ण के प्रति उनका प्रेम अथाह है। कृष्ण से जुड़ी एक–एक चीज़ उनके लिए अनमोल है। ब्रजभूमि, वहाँ के पशु–पक्षी, बाग–बगीचे, पेड़–पौधे सभी उन्हें अत्यंत प्रिय हैं। कृष्ण का वह कंबल व लाठी, जिन्हें लेकर वे गाय चराते थे, उनके लिए दुनिया की सबसे मूल्यवान वस्तु से भी अधिक कीमती हैं। तात्पर्य यह है कि रसखान कृष्ण के प्रेम में पूरी तरह डूबे हुए हैं।

पाठगत प्रश्न-5.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'काग के भाग बड़े सजनी' ऐसा गोपी ने इसलिए कहा क्योंकि कौवे को –

(क) माखन वाली रोटी मिल गई ☐ (ख) कृष्ण के हाथ की रोटी मिल गई ☐

(ग) गोपियों के रहते रोटी मिल गई ☐ (घ) बिना मेहनत के रोटी मिल गई ☐

2. 'राज तिहूँ पुर को तजि डारौं' में 'पुर' का तात्पर्य है?

(क) नगर ☐ (ख) राज्य ☐

(ग) लोक ☐ (घ) ग्राम ☐

5.4 भाषा-प्रयोग

इन सवैयों में कवि ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। ब्रजभाषा अपनी कोमलता एवं मिठास के लिए प्रसिद्ध है। बाललीला का वर्णन इसीलिए इतना सुंदर बन पड़ा है। कवि ने कविता में एक जगह 'ससि' शब्द का प्रयोग किया है, जिसका अर्थ होता है: 'चंद्रमा'। चंद्रमा के लिए और भी शब्द-प्रयोग में आ सकते हैं; जैसे- इंदु, विधु, राकेश, मयंक, चंदा इत्यादि। समान अर्थ बताने वाले अनेक शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं, पर्याय का अर्थ है – समान अर्थ वाला।

निम्नलिखित पर्यायवाची शब्दों को ध्यान से पढ़िए-

आग	=	अग्नि, पावक, वह्नि	माँ	=	जननी, अंबा, माता
अध्यापक	=	शिक्षक, आचार्य, गुरु	रघुवीर	=	राम, रघुनाथ, दशरथनंदन
अंधकार	=	अँधेरा, तम, तिमिर	मार्ग	=	रास्ता, पथ, बाट
खुशी	=	आनंद, प्रसन्नता, हर्ष	ओष्ठ	=	होंठ, पुट, अधर
जल	=	पानी, नीर, वारि	आँख	=	नयन, नेत्र, दृग
कमल	=	पंकज, नीरज, वारिज	कृष्ण	=	श्याम, कान्हा, हरि
त्योहार	=	पर्व, उत्सव, समारोह	सुंदर	=	मनोरम, चारू, अभिराम
मनुष्य	=	मानव, नर, इन्सान	मक्खन	=	नवनीत, माखन, लोनी
स्त्री	=	महिला, नारी, औरत	वन	=	अरण्य, जंगल, विपिन
फूल	=	सुमन, कुसुम, पुष्प	तालाब	=	ताल, तड़ाग, सरोवर

5.5 आपने क्या सीखा

- श्री राम के बाल-रूप का चित्रण अत्यंत सहज व स्वाभाविक है।
- वन मार्ग पर चलती सीता का वर्णन बहुत मर्मस्पर्शी है।
- तुलसी ने सीता के प्रति राम के प्रेम का सुंदर चित्रण किया है।
- श्रीकृष्ण की बाल-छवि मनमोहक है।
- ब्रज-भूमि की प्रत्येक वस्तु के प्रति लगाव रसखान के कृष्ण-प्रेम का परिचायक है।
- समान अर्थ बताने वाले शब्दों को पर्यायवाची कहते हैं।

5.6 योग्यता-विस्तार

तुलसीदास – गोस्वामी तुलसीदास रामभक्त कवि थे। उन्होंने 'रामचरितमानस' नामक महान ग्रंथ की रचना की, जिसमें राम के जन्म से लेकर वनवास और रावण का वध करने के उपरांत अयोध्या-आगमन तक की कथा को लिया गया है। इसे अवधी भाषा में लिखा गया है। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'दोहावली', 'कवितावली', 'विनयपत्रिका' आदि ग्रंथ ब्रजभाषा में लिखे हैं।

रसखान – रसखान दिल्ली के सुप्रतिष्ठित पठान वंश में जन्मे थे। कृष्ण-भक्ति ने इन्हें अपनी ओर आकृष्ट किया और फिर वे जीवन भर के लिए ब्रज में जाकर बस गए। रसखान ने भक्ति, नीति और शृंगारपरक रचनाएँ की हैं। सवैया इनका प्रिय छंद है।

5.7 पाठांत प्रश्न

1. **सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

(i) श्री राम किसे देखकर डरते हैं-

(क) चंद्रमा को ☐ (ख) क्रोधित माता को ☐

(ग) अपनी परछाई को ☐ (घ) भाइयों के अड़ने को ☐

(ii) सीता की आतुरता को देखकर श्री राम-

(क) क्रोध करने लगे ☐ (ख) रोने लगे ☐

(ग) लौटने लगे ☐ (घ) सोच-विचार में पड़ गए ☐

(iii) कृष्ण आँगन में क्या कर रहे हैं-

(क) ताली बजाकर नाच रहे हैं ☐

(ख) कौए को रोटी खिला रहे हैं ☐

(ग) खेल और खा रहे हैं ☐

(घ) परछाई को निहार रहे हैं ☐

(iv) तीनों लोकों का राज्य रसखान छोड़ देना चाहते हैं, अगर उन्हें

(क) नंद की गाय चराने को मिल जाएँ ☐

(ख) ब्रज के बन-बाग और तड़ाग देखने को मिल जाएँ ☐

(ग) कृष्ण की लाठी और कंबल मिल जाएँ ☐

(घ) करील के कुंजों में रहने को मिल जाए। ☐

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) बचपन में श्रीराम अपनी माँ से क्या माँगते हैं?

....

....

(ii) श्रीराम की बाल-लीला देखकर कवि तुलसीदास क्या कामना करते हैं?

....

....

(iii) श्रीराम की आँखों से आँसू की बूँदे क्यों छलक पड़ीं?

....

....

(iv) कृष्ण की किन-किन चीज़ों पर कवि रसखान तीनों लोकों का राज्य त्यागने की इच्छा प्रकट करते हैं?

....

....

3. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-35 शब्दों में लिखिए :

तुलसीदास और रसखान के बाल-लीला के सवैयों में क्या-क्या समानताएँ और अंतर दिखाई पड़ते है? लिखिए।

....

....

4. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

पर्यायवाची शब्द का अर्थ है-

(क) अर्थ बताने वाले शब्द

(ख) समान अर्थ बताने वाले शब्द

(ग) पुरुष जाति का बोध कराने वाले

(घ) भिन्न अर्थ बताने वाले शब्द

5. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए :

	शब्द	**पर्यायवाची शब्द**		
(i)	कमल	....	....	....
(ii)	पानी	....	....	....
(iii)	पुष्प	....	....	....
(iv)	स्त्री	....	....	....

6. **निम्नलिखित कविता पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

मानुष हौं तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं तो कहा बसु मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्‌यौ कर छत्र पुरंदर कारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।।

(i) अगले जन्म में मनुष्य होने पर कवि क्या कामना करता है?

....

....

(ii) यदि उसे अगले जन्म में पशु-योनि मिले, तो वह क्या करना चाहता है?

....

....

(iii) ब्रजवासियों को घनघोर वर्षा से बचाने के लिए श्री कृष्ण ने क्या किया था?

....

....

(iv) यमुना के किनारे कदम्ब की डालों पर कवि किस रूप में बैठना चाहता है?

....

....

5.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

1. (ग) हठी
2. (क) थकान